शेर आग बबूला हो उठा। उसने कान के पास पंजा मारा। मक्खी तो उड़ गई पर कान ज़रा छिल गया। मक्खी उड़कर शेर की नाक पर बैठी तो उसने मक्खी को फिर पंजा मारा। मक्खी उड़ गई। अबकी बार शेर की नाक छिल गई।

मक्खी कभी शेर के माथे पर बैठती, कभी गाल पर, तो कभी गर्दन पर।

शेर पंजा मारता जाता और खुद को घायल करता जाता... मक्खी तो फट से उड़ जाती।

अंत में शेर ऊब गया, थक गया। वह बोला – मक्खी बहन, अब मुझे छोड़ो। मैं हारा और तुम जीतीं, बस।

मक्खी घमंड में चूर होकर उड़ती-उड़ती आगे बढ़ी। सामने एक हाथी मिला। मक्खी ने कहा – अरे हाथी... मुझे प्रणाम कर... मैंने जंगल के राजा शेर को हराया है। इसलिए जंगल में अब मेरा राज चलेगा। हाथी ने सोचा, इस पागल मक्खी से बहस करने में समय कौन बर्बाद करे।

हाथी ने सूँड़ ऊपर उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया। सामने से आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा। लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराने लगी। इतने में मक्खी ने लोमड़ी से कहा – अरे ओ लोमड़ी, चल मुझे प्रणाम कर! मैंने जंगल के राजा शेर और विशालकाय हाथी को भी हरा दिया है।

Case-Study Class - III _/_/_

ऊपर दिए गए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों से सही विकल्प को चुनो -

1. शेर बार-बार मक्खी को मारने के लिए खुद को क्या कर रहा था ?
परेशान घायल गुस्सा खुश

2. शेर क्या मारकर खुद को घायल कर रहा था ?
तीर तलवार त्रिशूल पंजा

3. शेर ऊब जाने के बाद अपनी क्या मान ली ?
हार जीत कमजोरी मुर्खता

4. हाथी ने मक्खी को प्रणाम क्यों किया ?
हाथी कमजोर था ।
हाथी मक्खी से बहस नहीं करना चाहता था ।
हाथी मुर्ख था ।
हाथी को अपने बच्चों के पास जाना था ।

5. मक्खी की हरकतों को कौन देख रहा था ?
शेर
हाथी
लेखक
लोमड़ी